पवित्र आत्मा हमें किस प्रकार इतनी तीव्रता से चाहता है —
यहाँ तक कि ईर्ष्या तक?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

शालोम।

हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम की महिमा हो। आइए पवित्र शास्त्रों का अध्ययन करें। मसीही होने के नाते कुछ बातें हैं जिन्हें हमें सदैव याद रखना चाहिए।

जब हम कहते हैं कि हम उद्धार पाए हैं, तो उसका अर्थ यह है कि हम अपने परमेश्वर के साथ एक पवित्र वैवाहिक वाचा में प्रवेश कर चुके हैं। परमेश्वर हमारा पति बन जाता है (यिर्मयाह 3:14), और हम आत्मा में उसकी दुल्हन बन जाते हैं। और एक चेतावनी है जो परमेश्वर ने प्राचीन काल से ही अपनी प्रजा को दी थी: उसने कहा, “मैं एक जलन रखने वाला (ईर्ष्यालु) परमेश्वर हूँ।”
निर्गमन 20:4–6 में यह स्पष्ट रूप से लिखा है — कि उसकी ईर्ष्या इतनी गंभीर है कि उसका प्रभाव कई पीढ़ियों तक जा सकता है, यदि लोग उसकी ओर न मुड़ें। और यह सब केवल मूर्ति–पूजा के कारण होता है।

आप सोच सकते हैं: आकाश और पृथ्वी के सृष्टिकर्ता परमेश्वर को ईर्ष्या कैसे हो सकती है?
उत्तर यह है कि ईर्ष्या उसके स्वभाव का एक भाग है, क्योंकि

पवित्र आत्मा हमें किस प्रकार इतनी तीव्रता से चाहता है —
यहाँ तक कि ईर्ष्या तक?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

मनुष्य ईश्वर के स्वरूप में बनाए गए हैं — न कि ईश्वर हमारे स्वरूप में। इसलिए संबंधों में ईर्ष्या का गुण सबसे पहले उसी से आया है, न कि हमसे।

बाइबल कहती है कि ईर्ष्या की कठोरता क्रोध और प्रकोप से भी अधिक है। यह उस मनुष्य से मिलना बेहतर है जो घोर क्रोध में है, जिसकी हत्या के कारण आप पर उसका रोष है, बनिस्बत उस व्यक्ति के जो अपने प्रिय के कारण जलन से भरा है।

नीतिवचन 27:4
“क्रोध निर्दयी है, और प्रकोप प्रचंड; परन्तु ईर्ष्या के सामने कौन ठहर सकता है?”

इसी कारण हमें, मसीहियों को, यह हमेशा ध्यान में रखना चाहिए — क्योंकि नए नियम के अंतर्गत परमेश्वर की ईर्ष्या पिछली वाचा की तुलना में कहीं अधिक है।

क्या आप जानते हैं क्यों?
क्योंकि अब पवित्र आत्मा हमारे भीतर निवास करता है।

जिन इस्राएलियों ने जंगल में सोने के बछड़े को बनाकर परमेश्वर को ईर्ष्या दिलाई, उनकी दशा आज हमसे बेहतर कही जा सकती है — यदि हम पवित्र आत्मा को दुख पहुँचाते और उसे ईर्ष्या का कारण देते

पवित्र आत्मा हमें किस प्रकार इतनी तीव्रता से चाहता है —
यहाँ तक कि ईर्ष्या तक?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

हैं। जब हम उद्धार के मार्ग से भटक जाते हैं, तथाकथित “संतों” की मूर्तियों के सामने झुकते हैं, या व्यभिचार और दुराचार में पड़ते हैं — तो यह स्पष्ट संकेत है कि हम अपने अंदर बसने वाले पवित्र आत्मा को ईर्ष्या दिला रहे हैं।

1 कुरिन्थियों 10:21–22
“तुम प्रभु की मेज़ और दुष्टात्माओं की मेज़ दोनों में सहभागिता नहीं कर सकते। क्या हम प्रभु को ईर्ष्या दिलाना चाहते हैं? क्या हम उससे अधिक शक्तिशाली हैं?”

बाइबल आगे कहती है:

याकूब 4:4–5
“हे व्यभिचारियों! क्या तुम नहीं जानते कि संसार की मित्रता परमेश्वर से बैर है? इसलिए जो कोई संसार का मित्र बनना चाहता है, वह अपने को परमेश्वर का शत्रु बनाता है।
क्या तुम सोचते हो कि पवित्र शास्त्र व्यर्थ कहता है— कि आत्मा, जिसने हमारे भीतर वास किया है, वह हमें बड़ी लालसा से चाहता है?”

इन वचनों से सरल भाषा में यही अर्थ निकलता है कि जब पवित्र आत्मा हमारे भीतर आता है, तो वह हमसे अत्यंत गहराई से प्रेम करता है — इतना कि जब हम जान-बूझकर परमेश्वर की आज्ञाएँ तोड़ते

पवित्र आत्मा हमें किस प्रकार इतनी तीव्रता से चाहता है —
यहाँ तक कि ईर्ष्या तक?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

हैं, तो वह ईर्ष्या से जल उठता है।

और यह ईर्ष्या परमेश्वर को हमारे विरुद्ध कठोर कदम उठाने के लिए प्रेरित कर सकती है। कुछ को वह बीमारियों से गुजरने देता है, कुछ को अकाल मृत्यु भी मिल जाती है — और इसका कारण शैतान नहीं, बल्कि स्वयं परमेश्वर होता है।

इफिसियों 4:30
“और परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित न करो, जिसके द्वारा तुम मुक्ति के दिन के लिये मोहर लगाए गए हो।”

परन्तु हमारा परमेश्वर दयालु भी है। वह अक्सर अपना क्रोध पीछे रखता है, और इस बात की प्रतीक्षा करता है कि कोई मनुष्य पश्चात्ताप करे और उसकी ओर फिर से लौट आए।

यदि तुम उन्हीं में से एक हो— जो कभी उद्धार पाया था, परन्तु फिर पथभ्रष्ट हो गया; जिसने अपने कर्मों द्वारा पवित्र आत्मा को अत्यधिक ईर्ष्या दिलाई; और जो दंड का अधिकारी था, फिर भी आज जीवित है — तो यह केवल उसके अनुग्रह से है।
यदि तुम सच्चे मन से लौटने को तैयार हो, तो परमेश्वर तुम्हें क्षमा करेगा।

इसलिए तुम्हें चाहिए कि तुम स्वयं निर्णय लेकर पश्चात्ताप करो

पवित्र आत्मा हमें किस प्रकार इतनी तीव्रता से चाहता है —
यहाँ तक कि ईर्ष्या तक?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

— किसी एकांत स्थान पर जा कर परमेश्वर के सामने अपना पाप स्वीकार करो। फिर उसके बाद एक सच्चे मसीही के समान जीवन जीना शुरू करो। क्योंकि उस समय से परमेश्वर तुम्हारे आचरण को देखेगा कि तुम वास्तव में बदले हो या नहीं।
यदि तुम सच्चे दिल से पुराने मार्गों को छोड़ देते हो, तो वह तुम्हारे विरुद्ध अपनी ईर्ष्या का क्रोध हटा देगा और तुम्हें चंगा करेगा — यदि वह पहले से अनुशासन देना शुरू कर चुका था।

इसलिए हमेशा याद रखो: पवित्र आत्मा हमें इतनी लालसा से चाहता है कि ईर्ष्या तक हो उठता है।
यह हमारा दायित्व है कि हम अपने मसीही जीवन में अत्यंत सावधानी से चलें।

यदि तुम इस संदेश या ऐसे ही अन्य संदेशों को व्हाट्सऐप समूहों या किसी और स्थान पर साझा करने के लिए प्रेरित हो, तो अवश्य करो। पर कृपया कुछ भी बदलना या Wingu La Mashahidi का संपर्क हटाकर अपनी नंबर डालना न करो, ताकि भ्रम न फैले।
हमने शिकायतें पाई हैं कि कुछ लोग— जिनमें मसीह का मन नहीं है— हमारे संदेश को लेकर हमारी जानकारी हटाते हैं और अपनी नंबर डाल देते हैं, ताकि लोगों से चंदा मांग सकें।
(Wingu La Mashahidi ने कभी किसी से दान मांगने के लिए फोन नहीं किया।)
इसलिए सावधान रहें!

पवित्र आत्मा हमें किस प्रकार इतनी तीव्रता से चाहता है —
यहाँ तक कि ईर्ष्या तक?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

प्रभु हम सभी को आशीष दे और अपनी कृपा बढ़ाए।

हमारे व्हाट्सऐप चैनल से जुड़ने के लिए यहाँ क्लिक करें >>

WHATSAPP

शालोम।

Share on:
WhatsApp